पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने छत्रपति शिवाजी महाराज जन्मोत्सव कार्यक्रम में सम्मिलित हुए
शिवाजी ने मातृभूमि की रक्षा के लिए कभी स्वाभिमान से समझौता नहीं किया - राज्यपाल
शिवाजी के हिन्दवी स्वराज्य में धर्म, भाषा और जाति का कोई भेदभाव नहीं था - मुख्यमंत्री

लखनऊ 19 फरवरी, 2018

मराठी समाज उत्तर प्रदेश द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय में छत्रपति शिवाजी महाराज जन्मोत्सव एवं शिव ज्योत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने की तथा मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर रोहित दत्ता थे। इस अवसर पर पूर्व सांसद श्री लालजी टण्डन, विधायक श्री नीरज बोरा, कुलपति भातखण्डे संगीत संस्थान सम विश्वविद्यालय श्रीमती श्रुति सडोलीकर काटकर, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय प्रो0 एस0पी0 सिंह, मराठी समाज के अध्यक्ष श्री उमेश कुमार पाटील सहित बड़ी संख्या में अन्य विशिष्टजन उपस्थित थे। राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री सहित सभी अतिथियों ने विश्वविद्यालय के प्रागंण में स्थापित शिवाजी महाराज की अश्वरोही कांस्य प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके नमन किया। कार्यक्रम में शिवाजी के जन्मस्थल शिवनेरी दुर्ग से लखनऊ तक 1,600 किलोमीटर की यात्रा कर पहुंचे लगभग 200 नवयुवक भी सम्मिलत थे।

राज्यपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'मैं मुंबई में हर वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मोत्सव के कार्यक्रम में सम्मिलित होता था। लखनऊ में आज का आयोजन देखकर मुझे लग रहा है कि मुंबई यहाँ आ गई है।' राज्यपाल ने कहा कि शिवाजी को सर्वश्रेष्ठ सेनापति के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह उनकी विशेषता थी कि वे स्वयं युद्ध के मैदान में होते थे। उनका नाम महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सम्मान से लिया जाता है। शिवाजी ने मातृभूमि के खिलाफ साजिश करने के लिए अपने पुत्र को भी हिरासत में लेने का आदेश दिया था। उन्होंने कहा कि शिवाजी ने मातृभूमि की रक्षा के लिए कभी स्वाभिमान से समझौता नहीं किया।

श्री नाईक ने कहा कि शिवाजी के राज्याभिषेक और काशी का जो रिश्ता है वहीं रिश्ता भगवान राम और पंचवटी का है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र का रिश्ता पुराना है। शिवाजी का राज्याभिषेक काशी के विद्वान पंडित गागा भट्ट ने कराया था। इसी तरह सिंधिया घाट, भोसले घाट, अहिल्याबाई घाट आदि का निर्माण महाराष्ट्र के लोगों द्वारा किया गया है। काशी की सांस्कृतिक धरोहर एवं विरासत में महाराष्ट्र के लोगों का उल्लेखनीय योगदान है। उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान के लिए एम0ओ0यू0 भी हुआ है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान से दोनों राज्य देश की एकता बढ़ाने तथा विकास करने का कार्य करें।

राज्यपाल ने बताया कि आगरा किले के दीवान-ए-खास में स्थापित शिलापट्ट पर 1666 ई0 में शिवाजी के औरंगजेब से मिलने के उल्लेख के साथ कुछ भ्रामक तथ्य अंकित थे। उनके प्रयास से शिलापट्ट से भ्रामक तथ्यों को हटाया गया। उन्होंने बताया कि आगरा के एक चैराहे पर शिवाजी की मूर्ति का उचित रखरखाव न होने पर उन्होंने इस संबंध में उचित रखरखाब के निर्देश दिए। आगरा विश्वविद्यालय द्वारा मूर्ति के रखरखाव की जिम्मेदारी ली गई है। उन्होंने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय में छत्रपति शिवाजी की अश्वरोही मूर्ति उन्हें समाधान देने वाला कार्य है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शिवाजी जन्मोत्सव कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि जो समाज अपने इतिहास को विस्मृत करता है वह अपने भूगोल की भी रक्षा नहीं कर सकता है। शिवाजी ने कभी हार नहीं मानी। वे ऐसे वीर थे जिन्होंने प्रेरणा दी कि विषम परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांत से नहीं हटना चाहिए। उनकी कार्यशैली सार्वजनिक जीवन में जातिवाद और परिवारवाद के लिए संदेश है। उन्होंने कहा कि शिवाजी ने ऐसे हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना की जिसमें धर्म, भाषा और जाति का कोई भेदभाव नहीं था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिवाजी ने शौर्य और पराक्रम का परिचय देते हुए आगरा में नए इतिहास का सृजन किया। उन्होंने गोरिल्ला युद्ध एवं नौसेना बेड़े की शुरूआत की। दुश्मन के प्रति क्या रणनीति होनी चाहिए उनके कृतित्व से प्रदर्शित होता है। शिवाजी का राज्याभिषेक काशी के विद्धान पंडित ने कराया था। स्वदेश, स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति उनका लगाव प्रेरणा योग्य है। छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरू गोविन्द सिंह आदि ऐसे महापुरूष हैं कि जब तक देश उनको स्मरण करता रहेगा, तब तक देश की स्वाधीनता पर आंच नहीं आएगी। उन्होंने कहा कि युवा ऐसे व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर भारत को अग्रणी देश बनाने का प्रयास करें।

कार्यक्रम में श्री लालजी टण्डन ने स्वागत उद्‌बोधन देते हुए कहा कि शिवाजी को राजा की हैसियत से नहीं बल्कि योद्‌धा की हैसियत से याद किया जाता है। उन्होंने कहा कि शिवाजी ने स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया।

कार्यक्रम में राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

अंजुम/ललित/राजभवन (74/27)